Patrika (Indore), 23rd December 2022, Frontpage-03

प्रदेशभर की संस्थाओं में अनुसंधान और नवाचार प्रोजेक्ट पर तीन वर्ष में 170 करोड़ रुपए का ही आवंटन

कमाल के लिए कंगाली, सिस्टम की आदत ने कामयाबी से भी फेरा मुंह

उपयोगी रिसर्च को आम लोगों तक पहुंचाने अथवा उनके अमल को लेकर भी स्पष्टता का अभाव

गोविंद ठाकरे
patrika.com

इंदौर. वैज्ञानिक अनुसंधान और नवाचार शायद सरकार की प्राथमिकता से बाहर है। यही वह क्षेत्र है, जहां से स्किल्ड होकर युवाओं के सपनों को उड़ान मिलती है। रोजगार के नए-नए अवसर खुलते हैं। हैरानी की बात है कि पिछले तीन सालों में इस क्षेत्र से संबंधित परियोजना विकास और अनुसंधान पर 174 करोड़ नौ लाख रुपए आवंटित किए गए। ज्यादातर स्वीकृत प्रोजेक्ट की रिसर्च प्रक्रिया पूरी हो चुकी है, लेकिन तकनीक को लागू करने में भी उतनी ही उदासीनता बरती जा रही है। कई प्रोजेक्ट बेहतरीन नवाचार की श्रेणी में हैं, इनमें इंदौर आइआइटी सहित कई संस्थाओं और शोधकर्ताओं ने परचम लहराया है। भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर सहित प्रदेश के अन्य शहरों की संस्थाओं और विशेषज्ञों ने उल्लेखनीय अनुसंधान कार्य किया है।

औद्योगिक और उद्यमिता की बात करें तो इससे संबंधित नवाचार अनुसंधान पर महज 10 लाख रुपए खर्च किए गए हैं। खाद्य-पोषण और स्वास्थ्य पर केंद्रित अनुसंधान कार्यक्रम मात्र 11 करोड़ 33 लाख रुपए के फंड से संचालित हैं। साइबर अपराधों से लोग हलाकान हैं, इसके बाद भी साइबर रिसर्च पर सात करोड़ 25 लाख रुपए के प्रोजेक्ट शुरू किए गए। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास पर जरूर थोड़ा ध्यान दिया गया है। इस सेक्टर में तकनीकी नवाचार जैसे अनुसंधान कार्य पर अब तक कुल 162 करोड़ 66 लाख रुपए की राशि आवंटित की गई।

विज्ञान एवं तकनीकी अनुसंधान में आइआइटी इंदौर का परचम

1 आइआइटी इंदौर ने करीब 11 लाख रुपए के प्रोजेक्ट से पानी से हाइड्रोजन उत्पादन का नया तरीका खोज निकाला है।

2 आइआइटी इंदौर में 21 लाख से तीन करोड़ तक की विज्ञान एवं तकनीक को बढ़ावा देने के लिए गणित, बायोमेडिकल, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान से संबंधित 1-1 परियोजना अनुमोदित है।

3 सेमीकंडक्टर उपकरणों और खगोलीय रिसर्च के लिए नैनो मटेरियल और पतली फिल्मों के बड़े पैमाने पर उत्पादन का प्रोजेक्ट 40 लाख की लागत से 2020 में पूरा कर लिया गया।

4 माइक्रो उपकरणों के मुद्रण के लिए लेजर आधारित थ्रीडी प्रिंटर का डिज़ाइन और विकास बहुत कम लागत साढ़े तैंतीस लाख रुपए में पूर्ण कर लिया गया है।

5 भूस्खलन पूर्व चेतावनी का विकास 50 लाख से भी कम खर्च पर प्रोजेक्ट अनुमोदित किया है।

नवाचार में भी कमाल

1 इनोवेशन बेस्ड विज्ञान संचार जागरुकता के लिए इको नेक्स्ट कैपेसिटी बिल्डिंग का रिसर्च प्रोजेक्ट इंदौर की सामाजिक व शैक्षणिक संस्था ने कम खर्च में किया।

2 एक अन्य शैक्षणिक संस्था ने साढ़े नौ लाख रुपए लागत से स्कूलों में विज्ञान के प्रसार और विज्ञान साक्षरता की डिजिटल तकनीक इजाद की है।

3 एक वेलफेयर सोसाइटी ने समुदाय आधारित भागीदारी के लिए स्वास्थ्य संबंधी नई तकनीक खोज निकाली है। इस पर कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है।

4 जरूरतमंद जिलों के विद्यार्थियों के बीच इनोवेटिव तकनीक और उत्पादन विकास को पहुंचाने का प्रोजेक्ट स्वीकृत किया गया है। इसका जिम्मा भी स्वयंसेवी संगठन को दिया है।

5 दीर्घकालिक स्थिरता के लिए रीसाइक्लिंग और अपसाइक्लिंग की तकनीक के बारे में विज्ञान और तकनीक संचार का प्रोजेक्ट भी मंजूर किया गया है।

बायो टेक्नोलॉजी में भी शहर का दबदबा

1 आइआइटी वैज्ञानिकों ने 2021 में सांस से फैलने वाले कोरोना रोकथाम व कीटाणुरोधी प्रणाली का विकास करीब 21 लाख में पूरा किया।

2 आइआइटी के विशेषज्ञों ने दवा रोधी क्षय रोग के उपचार के लिए नए बेंजो फ्यूज्ड हेट्रोसायकल का विकास किया है।

3 आइआइटी में बोवाइन स्पर्म से क्सिंग के लिए पोलराइज एंगुलर लाइट स्कैटरिंग और माइक्रो फ्लुइडिक्स तकनीक के विकास का प्रोजेक्ट स्वीकृत किए गए हैं।

एक्सपर्ट व्यू

हर देश की प्रगति में सबसे अहम योगदान विज्ञान और प्रौद्योगिकी का रहा है। सरकार अगर बजट में बढ़ोतरी करें तो स्तरीय रिसर्च की संख्या में भी इजाफा होगा। विकसित देशों में विश्वविद्यालयों में रिसर्च सेंटरों की तरह सिर्फ रिसर्च हो रही है। यहां भी ऐसी व्यवस्था लागू हो तो परिणाम बेहतर होंगे।

प्रो.एसएल गर्ग, डायरेक्टर, वर्ल्ड रिसर्चर्स एसोसिएशन

प्रोजेक्ट का नाम	निर्धारित निधि
1. अनसंधान एवं विकास	22 करोड़ 67 लाख
2. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रोजेक्ट	100 करोड़ 61 लाख
3. इनोवेशन तकनीकी का विकास	32 करोड़ 13 लाख
4. जैव प्रौद्योगिक रिसर्च प्रोजेक्ट्स	11 करोड़ 33 लाख